इस्तिन्जा का तरीक़ा

ISTINJA KA TARIQA (HINDI)

- आबे ज़मज़म से इस्तिन्जा करना कैसा ? 5
- रफ़ए हाजत के लिये बैठने का तरीक़ा 11
- इस्तिन्जा के ढेलों के अहकाम 8
- टॉइलेट पेपर से पैदा होने वाले अमराज़ 13
- बैतुल ख़ला जाने की 47 निय्यतें 16

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी

مكتبة المدينة

(دعوتِ اسلامی)

SC1286

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"इस्तिन्जा का त़रीक़ा"

येह रिसाला (इस्तिन्जा का त़रीक़ा)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब,ई-मेईल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा-1,

अह़मद आबाद, गुजरात,

फ़ोन : 9374031409

E-mail : translaionmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जे़ल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा ।

दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ***ऐ अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुजुर्गी वाले*** (اَلْمُستطرَف ج ۱ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीन
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

इस्तिन्जा का त़रीक़ा (ह-नफ़ी)

शैत़ान लाख रोके येह रिसाला (18 सफ़्ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस के फ़वाइद खुद ही देख लेंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, ह़बीबे परवर्द गार, शफ़ीए रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे नूरबार है : ''तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर **दुरूदे पाक** पढ़ कर आरास्ता करो क्यूं कि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये **नूर** होगा ।''

(اَلْجَامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی ص ۲۸۰ حدیث ۴۵۸۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि सरकारे दो[2] आ़लम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दो[2] क़ब्रों के पास से गुज़रे

(तो ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया : येह दोनों[2] **क़ब्र** वाले अ़ज़ाब दिये जा रहे हैं और किसी बड़ी चीज़ में (जिस से बचना दुश्वार हो) अ़ज़ाब नहीं दिये जा रहे बल्कि एक तो **पेशाब के छींटों** से नहीं बचता था और दूसरा **चुग़ुल ख़ोरी** किया करता था फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने खजूर की ताज़ा टहनी मंगवाई और उसे आधों आध चीरा और हर एक की **क़ब्र** पर एक एक ह़िस्सा गाड़ दिया और फ़रमाया : जब तक येह खुश्क न हों तब तक इन दोनों[2] के **अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़** होगी ।

(سُنَنِ نَسائی ص۱۳ حدیث۳۱، صَحیح بُخاری ج۱ ص۹۵ حدیث۲۱۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

इस्तिन्जा का त़रीक़ा

۞ इस्तिन्जा ख़ाने में जिन्नात और शयात़ीन रहते हैं अगर जाने से पहले **बिस्मिल्लाह** पढ़ ली जाए तो इस की ब-र-कत से वोह सित्र देख नहीं सकते । ह़दीसे पाक में है : जिन्न की आंखों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब पाख़ाने को जाए तो **बिस्मिल्लाह** कह ले ।[1] या'नी जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये आड़ बनते हैं ऐसे ही येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र जिन्नात की निगाहों से आड़ बनेगा कि जिन्नात उस को देख न सकेंगे ।[2] ۞ इस्तिन्जा ख़ाने में दाख़िल होने से पहले **बिस्मिल्लाह** पढ़ लीजिये बल्कि बेहतर

۱ سُنَنِ تِرمِذی ج۲ ص۱۱۳ حدیث۶۰۶
۲ مِراٰۃ المناجیح ج۱ ص۲۶۸

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (त-बरानी)

है कि येह दुआ पढ़ लीजिये : (अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِكَ مِنَ الۡخُبُثِ وَالۡخَبَائِثِ *या'नी **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़, या **अल्लाह** ! मैं नापाक जिन्नों (नर व मादा) से तेरी पनाह मांगता हूं ।* (کِتابُ الدّعاء لِلطّبَرانی حدیث۳۵۷ص۱۳۲)

۞ फिर पहले **उलटा क़दम** इस्तिन्जा ख़ाने में रख कर दाख़िल हों ۞ सर ढांप कर इस्तिन्जा करें ۞ **नंगे सर** इस्तिन्जा ख़ाने में दाख़िल होना मम्नूअ़ है ۞ जब पेशाब करने या क़ज़ाए ह़ाजत के लिये बैठें तो मुंह और पीठ दोनों[2] में से कोई भी क़िब्ला की त़रफ़ न हो अगर भूल कर क़िब्ला की त़रफ़ मुंह या पुश्त कर के बैठ गए तो याद आते ही फ़ौरन क़िब्ला की त़रफ़ से इस त़रह़ रुख़ बदल दे कि कम अज़ कम 45 डिग्री से बाहर हो जाए इस में उम्मीद है कि फ़ौरन उस के लिये मग़्फ़िरत व बख़्शिश फ़रमा दी जाए ۞ बच्चों को भी क़िब्ला की त़रफ़ मुंह या पीठ करा के पेशाब या पाख़ाना न कराएं, अगर किसी ने ऐसा किया तो वोह गुनहगार होगा ۞ **जब** तक क़ज़ाए ह़ाजत के लिये बैठने के क़रीब न हो कपड़ा बदन से न हटाए और न ही ज़रूरत से ज़ियादा बदन खोले ۞ फिर दोनों[2] पाउं ज़रा कुशादा (या'नी खुले) कर के बाएं (या'नी उलटे) पाउं पर ज़ोर दे कर बैठे कि इस त़रह़ बड़ी आंत का मुंह खुलता है और इजाबत आसानी से होती है ۞ किसी दीनी मस्अले पर ग़ौर न करे कि मह़रूमी का बाइ़स है ۞ उस वक़्त छींक ۞ सलाम या अज़ान का जवाब ज़बान से न दे

❁ अगर खुद छींके तो ज़बान से اَلْحَمْدُ لِلّٰه न कहे, दिल में कह ले ❁ बातचीत न करे ❁ अपनी शर्मगाह की त़रफ़ न देखे ❁ उस नजासत को न देखे जो बदन से निकली है ❁ ख़्वाह म ख़्वाह देर तक इस्तिन्जा ख़ाने में न बैठे कि बवासीर होने का अन्देशा है ❁ पेशाब में न थूके, न नाक साफ़ करे, न बिला ज़रूरत खन्कारे, न बार बार इधर उधर देखे, न बेकार बदन छूए, न आस्मान की त़रफ़ निगाह करे, बल्कि शर्म के साथ सर झुकाए रहे ❁ क़ज़ाए ह़ाजत से फ़ारिग़ होने के बा'द पहले पेशाब का मक़ाम धोए फिर पाख़ाने का मक़ाम ❁ पानी से इस्तिन्जा करने का **मुस्तह़ब** त़रीक़ा येह है कि ज़रा कुशादा (या'नी खुला) हो कर बैठे और सीधे हाथ से आहिस्ता आहिस्ता पानी डाले और उलटे हाथ की उंग्लियों के पेट से नजासत के मक़ाम को धोए उंग्लियों का सिरा न लगे और पहले बीच की उंगली ऊंची रखे फिर इस के बराबर वाली इस के बा'द छोटी उंगली को ऊंची रखे, लोटा ऊंचा रखे कि छींटें न पड़ें, सीधे हाथ से इस्तिन्जा करना मक्रूह है और धोने में मुबा-लग़ा करे या'नी सांस का दबाव नीचे की जानिब डाले यहां तक कि अच्छी त़रह़ नजासत का मक़ाम धुल जाए या'नी इस त़रह़ कि चिक्नाई का असर बाक़ी न रहे अगर रोज़ादार हो तो फिर मुबा-लग़ा न करे ❁ त़हारत ह़ासिल होने के बा'द हाथ भी पाक हो गए लेकिन बा'द में साबुन वग़ैरा से भी धो ले[1] ❁ जब इस्तिन्जा ख़ाने से निकले तो

1 : बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 408 ता 413, رَدُّالْمُحتار ج١ص٦١٥ वग़ैरा

पहले सीधा क़दम बाहर निकाले और बाहर निकलने के बा'द(अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ) येह दुआ़ पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَذْھَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ (سُنَن ابن ماجہ ج۱ص۱۹۳حدیث۳۰۱)

*या'नी **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र है जिस ने मुझ से तक्लीफ़ देह चीज़ को दूर किया और मुझे आ़फ़िय्यत (राह़त) बख़्शी।*

बेहतर येह है कि साथ में येह दुआ़ भी मिला ले इस त़रह़ दो[2] ह़दीसों पर अ़मल हो जाएगा : **غُفْرَانَكَ** *तरजमा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत का सुवाल करता हूं।* **(سُنَنِ تِرمذی ج۱ص۸۷حدیث۷)**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

आबे ज़म ज़म से इस्तिन्जा करना कैसा ?

۞ ज़मज़म शरीफ़ से इस्तिन्जा करना मक्रूह है और ढेला न लिया हो तो ना जाइज़। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 413) ۞ वुज़ू के बक़िय्या पानी से त़हारत करना ख़िलाफ़े औला है। (ऐज़न) ۞ त़हारत के बचे हुए पानी से वुज़ू कर सकते हैं, बा'ज़ लोग जो इस को फेंक देते हैं येह न चाहिये इस्राफ़ में दाख़िल है। (ऐज़न)

इस्तिन्जा ख़ाने का रुख़ दुरुस्त रखिये

अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता आप के घर के इस्तिन्जा ख़ाने का रुख़ ग़लत़ है या'नी बैठते वक़्त क़िब्ला की त़रफ़ मुंह या पीठ होती है तो इस को दुरुस्त करने की फ़ौरन तरकीब कीजिये। मगर येह ज़ेहन में रहे कि

मा'मूली सा तिरछा करना काफ़ी नहीं । W.C. इस त़रह़ हो कि बैठते वक़्त मुंह या पीठ क़िब्ला से 45 डिग्री के बाहर रहे । आसानी इसी में है कि क़िब्ला से 90 डिग्री पर रुख़ रखिये । या'नी नमाज़ के बा'द दोनों[2] बार सलाम फैरने में जिस त़रफ़ मुंह करते हैं उन दोनों सम्तों में से किसी एक जानिब W.C. का रुख़ रखिये ।

इस्तिन्जा के बा'द क़दम धो लीजिये

पानी से इस्तिन्जा करते वक़्त उ़मूमन पाउं के टख़्नों की त़रफ़ छींटे आ जाते हैं लिहाज़ा एह़तियात़ इसी में है कि बा'दे फ़राग़त क़दमों के वोह ह़िस्से धो कर पाक कर लिये जाएं मगर येह ख़याल रहे कि धोने के दौरान अपने कपड़ों या दीगर चीज़ों पर छींटे न पड़ें ।

बिल में पेशाब करना

रह़मत वाले आक़ा, दो[2] जहां के दाता, शाफ़ेए़ रोज़े जज़ा, मक्की म–दनी मुस्त़फ़ा, मह़बूबे किब्रिया صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का फ़रमाने शफ़्क़त निशान है **:** तुम में से कोई शख़्स सूराख़ में पेशाब न करे ।

(سُنَنِ نَسائی ص١٤ حدیث٣٤)

जिन्न ने शहीद कर दिया

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیہِ رَحمَۃُ الْحَنّان फ़रमाते हैं **: जुह़्र** से मुराद या ज़मीन का सूराख़ है या दीवार की फटन (या'नी दराड़), चूंकि अक्सर सूराख़ों में ज़हरीले जानवर (या) च्यूंटियां वग़ैरा कमज़ोर जानवर या **जिन्नात** रहते हैं,

च्यूंटियां पेशाब या पानी से तक्लीफ़ पाएंगी या सांप व जिन्न निकल कर हमें तक्लीफ़ देंगे, इस लिये वहां पेशाब करना मन्अ़ फ़रमा गया। चुनान्चे (ह़ज़रते सय्यिदुना) सा'द इब्ने उ़बादा अन्सारी (رضی اللہ تعالٰی عنہ) की वफ़ात इसी से हुई कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने एक सूराख़ में पेशाब किया, जिन्न ने निकल कर आप को शहीद कर दिया। लोगों ने उस सूराख़ से येह आवाज़ सुनी :

نَحۡنُ قَتَلۡنَا سَیِّدَ الۡخَزۡرَجِ سَعۡدَ بۡنَ عُبَادَةَ وَ رَمَیۡنَاهُ بِسَهۡمٍ فَلَمۡ نُخۡطِ فُؤَادَه

तरजमा : या'नी हम ने क़बीला ख़ज़रज के सरदार सा'द बिन उ़बादा (رضی اللہ تعالٰی عنہ) को शहीद कर दिया और हम ने (ऐसा) तीर मारा जो उन के दिल से आर पार हो गया।

(مِراٰۃ ج ۱ ص ۲۶۷، مِرقاۃ ج ۲ ص ۷۲، واَشِعَّةُ اللَّمْعات ج ۱ ص ۲۲۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

ह़म्माम में पेशाब करना

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे **मक्कए मुकर्रमा** صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم ने फ़रमाया : कोई ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब न करे, फिर उस में नहाए या वुज़ू करे कि अक्सर **वस्वसे** इस से होते हैं। **(ابوداؤد ج ۱ ص ۴۴ حدیث ۲۷)** **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡهِ رَحمۃُ الۡحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : अगर ग़ुस्ल ख़ाने की ज़मीन पुख़्ता हो और उस में पानी ख़ारिज होने की नाली भी हो तो वहां पेशाब करने में ह़रज नहीं अगर्चे बेहतर है कि न करे, लेकिन अगर ज़मीन कच्ची हो और पानी निकलने का रास्ता भी न हो तो पेशाब करना सख़्त बुरा है कि ज़मीन नजिस हो

जाएगी, और गुस्ल या वुज़ू में गन्दा पानी जिस्म पर पड़ेगा। यहां दूसरी सूरत ही मुराद है इस लिये ताकीदी मुमा-न-अ़त फ़रमाई गई, या'नी इस से वस्वसे और वहम की बीमारी पैदा होती है जैसा कि तजरिबा है या गन्दी **छींटें** पड़ने का **वस्वसा** रहेगा। (मिरआत, जि. 1, स. 266)

इस्तिन्जा के ढेलों के अह़काम

۞ आगे पीछे से जब नजासत निकले तो ढेलों से इस्तिन्जा करना सुन्नत है और अगर सिर्फ़ पानी ही से त़हारत कर ली तो भी जाइज़ है, मगर **मुस्तह़ब** येह कि ढेले लेने के बा'द पानी से त़हारत करे ۞ आगे और पीछे से पेशाब, पाख़ाने के सिवा कोई और नजासत, म-सलन ख़ून, पीप वग़ैरा निकले, या इस जगह ख़ारिज से नजासत लग जाए तो भी ढेले से साफ़ कर लेने से त़हारत हो जाएगी, जब कि उस मौज़अ़ (या'नी जगह) से बाहर न हो मगर धो डालना **मुस्तह़ब** है ۞ ढेलों की कोई ता'दाद **मुअ़य्यन** (या'नी मुक़र्ररा ता'दाद) **सुन्नत** नहीं, बल्कि जितने से सफ़ाई हो जाए, तो अगर एक से सफ़ाई हो गई **सुन्नत** अदा हो गई और अगर तीन[3] ढेले लिये और सफ़ाई न हुई **सुन्नत** अदा न हुई, अलबत्ता **मुस्तह़ब** येह है कि त़ाक़ (म-सलन एक, तीन, पांच) हों और कम से कम तीन[3] हों तो अगर एक या दो[2] से सफ़ाई हो गई तो तीन[3] की गिनती पूरी करे, और अगर चार से सफ़ाई हो तो एक और ले कि त़ाक़ हो जाएं ۞ ढेलों से त़हारत उस वक़्त होगी कि नजासत से मख़्रज (या'नी ख़ारिज होने की जगह) के आस पास की जगह एक दिरहम[1] से ज़ियादा

1 : दिरहम की मिक़्दार मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द 1 सफ़्ह़ा 389 पर मुला-हज़ा फ़रमाइये।

आलूदा न हो और अगर दिरहम से ज़ियादा सन जाए तो धोना फ़र्ज़ है, मगर ढेले लेना अब भी **सुन्नत** रहेगा। ۞ कंकर, पथ्थर, फटा हुवा कपड़ा, येह सब ढेले के हुक्म में हैं, इन से भी साफ़ कर लेना बिला कराहत जाइज़ है (बेहतर येह है कि फटा कपड़ा या दरज़ी की बे क़ीमत कतरन सूती (COTTON) हो ताकि जल्द जज़्ब कर ले) ۞ हड्डी और खाने और गोबर और पक्की ईंट और ठेकरी और शीशा और कोएले और जानवर के चारे से और ऐसी चीज़ से जिस की कुछ क़ीमत हो, अगर्चे एक आध पैसा सही, उन चीज़ों से इस्तिन्जा करना मक्रूह है ۞ काग़ज़ से इस्तिन्जा मन्अ़ है, अगर्चे उस पर कुछ लिखा न हो, या अबू जह्ल ऐसे काफ़िर का नाम लिखा हो ۞ दाहिने (या'नी सीधे) हाथ से इस्तिन्जा करना मक्रूह है, अगर किसी का बायां हाथ बेकार हो गया, तो उसे दहने (या'नी सीधे) हाथ से जाइज़ है ۞ जिस ढेले से एक बार इस्तिन्जा कर लिया उसे दोबारा काम में लाना मक्रूह है, मगर दूसरी करवट उस की साफ़ हो तो उस से कर सकते हैं ۞ मर्द के लिये पीछे के मक़ाम के लिये ढेलों के इस्ति'माल का त़रीक़ा येह है कि गरमी के मौसिम में पहला ढेला आगे से पीछे को ले जाएं, दूसरा पीछे से आगे को और तीसरा आगे से पीछे को, सर्दियों में पहला ढेला पीछे से आगे, दूसरा आगे से पीछे को और तीसरा पीछे से आगे को ले जाएं। ۞ पाक ढेले दाहिनी (या'नी सीधी) जानिब रखना और बा'द काम में लाने के, बाईं (उलटे हाथ की) त़रफ़ डाल देना, इस त़रह़ पर कि जिस रुख़ में नजासत लगी हो नीचे हो, **मुस्तह़ब** है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 410 ता 412, عالمگیری ج۱ص ۴۸-۵۰) ۞ टॉइलेट पेपर के इस्ति'माल

की उ़-लमा ने इजाज़त दी है क्यूं कि येह इसी मक़्सद के लिये बनाया गया है और लिखने में काम नहीं आता। अलबत्ता बेहतर **मिट्टी का ढेला** है।

मिट्टी का ढेला और साइन्सी तह़क़ीक़

एक तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ मिट्टी में नौशादर (AMMONIUM CHLORIDE) नीज़ बदबू दूर करने वाले बेहतरीन अज्ज़ा मौजूद हैं। पेशाब और फुज़्ला जरासीम से लबरेज़ होता है, इस का जिस्मे इन्सानी पर लगना नुक़्सान देह है। इस के अज्ज़ा बदन पर चिपके रह जाने की सूरत में त़रह़ त़रह़ की बीमारियां पैदा होने का अन्देशा है। "डोक्टर हलोक" लिखता है : इस्तिन्जा के **मिट्टी के ढेले** ने साइन्सी दुन्या को वर्त़ए ह़ैरत में डाल रखा है। मिट्टी के तमाम अज्ज़ा जरासीम के क़ातिल होते हैं लिहाज़ा **मिट्टी के ढेले** के इस्ति'माल से पर्दे की जगह पर मौजूद जरासीम का ख़ातिमा हो जाता है बल्कि इस का इस्ति'माल "पर्दे की जगह के केन्सर" (CANCER OF PENIS) से बचाता है।

बुढ्ढे काफ़िर डोक्टर का इन्किशाफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुन्नत के मुत़ाबिक़ क़ज़ाए ह़ाजत करने में आख़िरत की सआ़दत और दुन्या में बीमारियों से ह़िफ़ाज़त है। कुफ़्फ़ार भी इस्लामी अत़्वार का ख़्वाही न ख़्वाही इक़रार कर ही लेते हैं। इस की झलक इस ह़िकायत में मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : चुनान्चे फ़िज़्योलोजी के एक सीनियर प्रोफ़ेसर का बयान है : मैं उन दिनों मराकिश में था, मुझे बुख़ार आ गया, दवा के लिये एक ग़ैर

मुस्लिम बुड्ढे घाग डॉक्टर के पास पहुंचा, उस ने पूछा : क्या मुसल्मान हो ? मैं ने कहा : हां मुसल्मान हूं और पाकिस्तानी हूं । येह सुन कर कहने लगा : अगर तुम्हारे पाकिस्तान में एक त़रीक़ा जो ख़ुद तुम्हारे नबी صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم का बताया हुवा है ज़िन्दा हो जाए तो पाकिस्तानी बहुत सारे अमराज़ से बच जाएं ! मैं ने ह़ैरत से पूछा : वोह कौन सा त़रीक़ा है ? बोला : **अगर क़ज़ाए ह़ाजत के लिये इस्लामी त़रीक़े पर बैठा जाए तो एपेन्डे साइट्स (APPENDICITIS), दाइमी क़ब्ज़, बवासीर और गुर्दों के अमराज़ नहीं होंगे !**

रफ़्ए़ ह़ाजत के लिये बैठने का त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन आप भी जानना चाहेंगे कि वोह करिश्माती त़रीक़ा कौन सा है तो सुनिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना सुराक़ा बिन मालिक رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते हैं : हमें ताजदारे रिसालत, सरापा अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم ने हुक्म दिया कि हम रफ़्ए़ ह़ाजत के वक़्त बाएं (उलटे) पाउं पर वज़्न दें और दायां पाउं खड़ा रखें । (مَجْمَعُ الزَّوائِد ج۱ ص۴۸۸ حدیث۱۰۲۰)

बाएं पाउं पर वज़्न डालने की ह़िक्मत

रफ़्ए़ ह़ाजत के वक़्त उकड़ूं बैठ कर दायां (सीधा) पाउं खड़ा या'नी अपनी अस्ल ह़ालत पर (NORMAL) रख कर बाएं या'नी उलटे पाउं पर वज़्न देने से बड़ी आंत जो कि उलटी त़रफ़ होती है और उसी में फ़ुज़्ला होता है उस का मुंह अच्छी त़रह़ खुल जाता और ब आसानी फ़रागत़ हो जाती और पेट अच्छी त़रह़ साफ़ हो जाता है और

जब पेट साफ़ हो जाएगा तो बहुत सारी बीमारियों से तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल रहेगा ।

कुरसी नुमा कमोड

अफ़्सोस ! आज कल इस्तिन्जा के लिये कमोड (COMMODE) आ़म होता जा रहा है इस पर कुरसी की त़रह़ बैठने के सबब टांगें पूरी त़रह़ नहीं खुलतीं, उक्डूं बैठने की तरकीब न होने के सबब उलटे पाउं पर वज़्न भी नहीं दिया जा सकता और यूं आंतों और मे'दे पर ज़ोर नहीं पड़ता इस लिये बराबर फ़राग़त नहीं हो पाती कुछ न कुछ फ़ुज़्ला आंत में बाक़ी रह जाता है जिस से आंतों और मे'दे के **मु-तअ़द्दिद अमराज़** पैदा होने का अन्देशा रहता है । **कमोड** के इस्ति'माल से आ'साबी तनाव पैदा होता है, ह़ाजत के बा'द पेशाब के क़त़रात गिरने के भी ख़त़रात रहते हैं ।

पर्दे की जगह का केन्सर

कुरसी नुमा कमोड में पानी से इस्तिन्जा करना और अपने बदन और कपड़ों को पाक रखना एक अम्रे दुश्वार है । ज़ियादा तर इस के लिये टॉइलेट पेपर्ज़ का इस्ति'माल होता है । कुछ अ़र्सा क़ब्ल यूरोप में पर्दे के ह़िस्सों के मोहलिक अमराज़ बिल ख़ुसूस **पर्दे की जगह का केन्सर** तेज़ी से फैलने की ख़बरें अख़्बारात में शाएअ़ हुई, तह़क़ीक़ी बोर्ड बैठा और उस ने नतीजा येह बयान किया कि इन अमराज़ के दो[2] ही अस्बाब सामने आए हैं **: (1)** टॉइलेट पेपर का इस्ति'माल करना और **(2)** पानी का इस्ति'माल न करना

टॉइलेट पेपर से पैदा होने वाले अमराज़

टॉइलेट पेपर बनाने में बा'ज़ ऐसे केमीकल इस्ति'माल होते हैं जो जिल्द (चमड़ी) के लिये इन्तिहाई नुक़्सान देह हैं। इस के इस्ति'माल से **जिल्दी अमराज़** पैदा होते हैं जैसा कि एग्ज़ीमा और चमड़ी का रंग तब्दील होना। "डॉक्टर केनन ड्यूस" का कहना है : टॉइलेट पेपर्ज़ का इस्ति'माल करने वाले इन चार अमराज़ के इस्तिक़्बाल की तय्यारी करें : (1) पर्दे की जगह का केन्सर (2) भगन्दर (एक फोड़ा जो मक़्अ़द के आस पास होता या'नी बैठने की जगह पर और बहुत तक्लीफ़ पहुंचाता है) (3) जिल्द इन्फ़ेक्शन (SKIN INFECTION) (4) फफूंदी के अमराज़ (VIRAL DISEASES)

टॉइलेट पेपर और गुर्दों के अमराज़

अतिब्बा का कहना है कि टॉइलेट पेपर से सफ़ाई बराबर नहीं होती लिहाज़ा जरासीम फैलते और ब-दने इन्सानी के अन्दर जा कर त़रह़ त़रह़ की बीमारियों का सबब बनते हैं। ख़ुसूसन औ़रतों की पेशाब गाह के ज़रीए़ **गुर्दों** में दाख़िल हो जाते हैं जिस के सबब बसा अवक़ात **गुर्दों से पीप** आना शुरूअ़ हो जाता है। हां टॉइलेट पेपर के इस्ति'माल के बा'द अगर पानी से इस्तिन्जा कर लिया जाए तो इस का नुक़्सान न होने के बराबर रह जाता है।

सख़्त ज़मीन पर क़ज़ाए ह़ाजत के नुक़्सानात

कुरसी नुमा कमोड और W.C. का इस्ति'माल शरअ़न जाइज़ है। सहूलत के लिहाज़ से कमोड के मुक़ाबले में W.C. बेहतर है जब

कि इतना कुशादा (या'नी चौड़ा) हो कि इस पर सुन्नत के मुताबिक़ बैठा जा सके। लेकिन आज कल छोटे W.C. लगाए जाते हैं और उन में कुशादा हो कर नहीं बैठा जा सकता। हां अगर क़दमचे या'नी पाउं रखने की जगह फ़र्श के साथ हमवार रखी जाए तो ह़स्बे ज़रूरत कुशादा बैठा जा सकता है। एक सुन्नत **नर्म ज़मीन** पर रफ़्ए ह़ाजत करना भी है। जैसा कि ह़दीसे रसूल صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم में है : जब तुम में से कोई पेशाब करना चाहे तो पेशाब के लिये नर्म जगह ढूंडे। **(اَلْجامِعُ الصَّغِير ص٣٧ حديث٥٠٧)** इस के फ़वाइद को तस्लीम करते हुए ल्यूवी पॉवल (louval poul) कहता है : "इन्सान की बक़ा मिट्टी और फ़ना भी मिट्टी है जब से लोगों ने नर्म मिट्टी की ज़मीन पर क़ज़ाए ह़ाजत करने के बजाए **सख़्त ज़मीन** (या'नी W.C., कमोड वग़ैरा) का इस्ति'माल शुरूअ़ किया है उस वक़्त से मर्दों में **जिन्सी** (मर्दाना) **कमज़ोरी** और **पथरी** के अमराज़ में इज़ाफ़ा हो गया है! सख़्त ज़मीन पर ह़ाजत करने के असरात **मसाने के ग़ुदूद** (PROSTATE GLANDS) पर भी पड़ते हैं, पेशाब या फ़ुज़्ला जब नर्म ज़मीन पर गिरता है तो उस के जरासीम और तेज़ाबिय्यत फ़ौरन जज़्ब हो जाते हैं जब कि सख़्त ज़मीन चूंकि जज़्ब नहीं कर पाती इस लिये तेज़ाबी और जरासीमी असरात बराहे रास्त जिस्म पर ह़म्ला आवर होते और त़रह़ त़रह़ के अमराज़ का बाइ़स बनते हैं।"

आक़ा صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم दूर तशरीफ़ ले जाते

मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم की शाने अ़-ज़मत निशान पर क़ुरबान कि जब क़ज़ाए ह़ाजत को

तशरीफ़ ले जाते तो इतनी दूर जाते कि कोई न देखे। (ابوداؤد ج۱ص۳۵حدیث۲)। या'नी या तो दरख़्त या दीवार के पीछे बैठते और अगर चटियल मैदान होता तो इतनी दूर तशरीफ़ ले जाते जहां किसी की निगाह न पड़ सकती। (मिरआत, जि. 1, स. 262) यक़ीनन सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हर फ़े'ल में दीन व दुन्या की बे शुमार भलाइयां पिन्हां होती हैं। पेशाब करने के बा'द अगर हर फ़र्द एक लोटा पानी बहा दिया करे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बदबू और जरासीम की अफ़्ज़ाइश में कमी होगी, बड़ा पेशाब करने के बा'द भी जहां एक आध लोटा पानी काफ़ी हो वहां फ़्लश टेंक से पानी न बहाया जाए क्यूं कि वोह कई लोटे पर मुश्तमिल होता है।

क़ज़ाए हाजत से क़ब्ल चलने के फ़वाइद

आज कल बिल खुसूस शहरों में बन्द कमरे के अन्दर ही बैतुल ख़ला (अटेच बाथ ATTACHED BATH) होते हैं, जो कि जरासीम की नश्वो नुमा और उन के ज़रीए फैलने वाले अमराज़ के ज़राएअ़ हैं। एक बायो केमिस्ट्री के माहिर का कहना है : जब से शहरों में वुस्अ़त, आबादियों की कसरत और खेतों की क़िल्लत होने लगी है तब से अमराज़ की ख़ूब ज़ियादत होने लगी है। क़ज़ाए हाजत के लिये जब से दूर चल कर जाना तर्क किया है **क़ब्ज़, गेस, तब्ख़ीर** और **जिगर की बीमारियां** बढ़ गई हैं। चलने से आंतों की ह़-र-कतों में तेज़ी आती है जिस के सबब हाजत तसल्ली बख़्श हो जाती है, आज कल बिग़ैर चले (घर ही घर में) बैतुल ख़ला में दाख़िल हो जाने की वजह से बसा अवक़ात फ़रागत भी ताख़ीर से होती है!

बैतुल ख़ला जाने की 47 निय्यतें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **: "मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।"** (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانى ج٦ ص١٨٥ حديث٥٩٤٢)

۞ सर ढांप कर ۞ जाने में उलटे पाउं से और ۞ बाहर निकलने में सीधे पाउं से पहल कर के इत्तिबाए़ सुन्नत करूंगा ۞ दोनों[2] बार या'नी दाख़िले से क़ब्ल और निकलने के बा'द मस्नून दुआ़एं पढ़ूंगा ۞ सिर्फ़ अंधेरे की सूरत में येह निय्यत कीजिये : त़हारत पर मदद ह़ासिल करने के लिये बत्ती जलाऊंगा ۞ फ़राग़त के फ़ौरन बा'द इस्राफ़ से बचने की निय्यत से बत्ती बुझा दूंगा ۞ ह़दीसे पाक (صَحِيح مُسلِم ص١٤٠ حديث٢٢٣) اَلطُّهُوْرُ شَطْرُ الْاِيْمَان तरजमा : "पाकी निस्फ़ ईमान है", पर अ़मल करते हुए पाउं को गन्दगी से बचाने के लिये चप्पल पहनूंगा ۞ पहनते हुए सीधे क़दम से और ۞ उतारते हुए उलटे से पहल कर के इत्तिबाए़ सुन्नत करूंगा ۞ सित्र खुला होने की सूरत में इस्तिक़्बाले क़िब्ला (या'नी क़िब्ला की त़रफ़ मुंह करने) और इस्तिदबारे क़िब्ला (या'नी क़िब्ला की त़रफ़ पीठ करने) से बचूंगा ۞ ज़मीन से क़रीब हो कर फ़क़त़ ह़स्बे ज़रूरत सित्र खोलूंगा ۞ इसी त़रह़ फ़राग़त के बा'द उठने से क़ब्ल ही सित्र छुपा लूंगा ۞ जो कुछ ख़ारिज होगा उस की त़रफ़ नहीं देखूंगा ۞ पेशाब के **छींटों** से बचूंगा ۞ ह़या से सर झुकाए रहूंगा ۞ ज़रूरतन आंखें बन्द कर लूंगा और ۞ बिला ज़रूरत शर्मगाह को देखने और छूने से बचूंगा ۞ उलटे हाथ से ढेला पकड़ कर उलटे ही हाथ से ख़ुश्क कर के उलटे हाथ की त़रफ़ उलटा (या'नी नजासत वाला ह़िस्सा ज़मीन

की त़रफ़) रखूंगा पाक सीधी त़रफ़ रखूंगा **मुस्तह़ब** ता'दाद में म-सलन तीन[3], पांच[5], सात[7] ढेले इस्ति'माल करूंगा ۞ पानी से त़हारत करते वक़्त भी सिर्फ़ उलटा हाथ शर्मगाह को लगाऊंगा ۞ शर-ई मसाइल पर ग़ौर नहीं करूंगा (कि बाइसे मह़रूमी है) ۞ सित्र खुला होने की सूरत में बातचीत नहीं करूंगा और ۞ पेशाब वग़ैरा में न थूकूंगा न ही उस में नाक सिनकूंगा ۞ अगर फ़ौरन ह़म्माम ही में वुज़ू करना न हुवा तो त़हारत वाली ह़दीस पर अ़मल करते हुए दोनों[2] हाथ धोऊंगा नीज़ ۞ जो कुछ निकला उस को बहा दूंगा (पेशाब करने के बा'द अगर हर फ़र्द एक लोटा पानी बहा दिया करे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बदबू और जरासीम की अफ़्ज़ाइश में कमी होगी, बड़ा इस्तिन्जा करने के बा'द भी जहां एक आध लोटा पानी काफ़ी हो वहां फ़्लश टेंक से पानी न बहा जाए क्यूं कि वोह कई लोटे पर मुश्तमिल होता है) ۞ पानी से इस्तिन्जा करने के बा'द पाउं के टख़्नों वाले ह़िस्से एह़तियात़ के साथ धो लूंगा (क्यूं कि इस मौक़अ़ पर उ़मूमन टख़्नों की त़रफ़ गन्दे पानी के छींटे आ जाते हैं) ۞ फ़ारिग़ हो कर जल्दी निकलूंगा ۞ बे पर्दगी से बचने के लिये बैतुल ख़ला का दरवाज़ा बन्द करूंगा ۞ मुसल्मानों को घिन से बचाने के लिये बा'दे फ़राग़त दरवाज़ा बन्द करूंगा ।

अ़वामी इस्तिन्जा ख़ाने में जाते हुए येह निय्यतें भी कीजिये

۞ अगर लाइन लम्बी हुई तो सब्र के साथ अपनी बारी का इन्तिज़ार करूंगा, किसी की ह़क़ त-लफ़ी नहीं करूंगा, बार बार दरवाज़ा

बजा कर उस को ईज़ा नहीं दूंगा ۞ अगर मेरे अन्दर होते हुए किसी ने बार बार दरवाज़ा बजाया तो सब्र करूंगा ۞ अगर किसी को मुझ से ज़ियादा ह़ाजत हुई और कोई सख़्त मजबूरी या नमाज़ फ़ौत होने का अन्देशा न हुवा तो ईसार करूंगा ۞ ह़त्तल इम्कान भीड़ के वक़्त इस्तिन्जा ख़ाने जा कर भीड़ में मज़ीद इज़ाफ़ा कर के मुसल्मानों पर बोझ नहीं बनूंगा ۞ दरो दीवार पर कुछ नहीं लिखूंगा ۞ वहां बनी हुई फ़ोह़्श तस्वीरें देख कर और ۞ ह़या सोज़ तह़रीरें पढ़ कर अपनी आंखों को बरोज़े क़ियामत अपने ख़िलाफ़ गवाह नहीं बनाऊंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआत, ए'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

ماخذ و مراجع

كتاب	مطبوعه	كتاب	مطبوعه
صحیح بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	جامع صغیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت
صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت	مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر بیروت
سنن ترمذی	دار الفکر بیروت	اشعۃ اللمعات	کوئٹہ
سنن ابوداود	دار احیاء التراث العربی بیروت	مراۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
سنن نسائی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوٰی عالمگیری	دار الفکر بیروت
سنن ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	ردالمحتار	دار المعرفۃ بیروت
معجم کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के म-दनी **क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आमात"** पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ओफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़्लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुधोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुधोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, श्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net